वर्ष 27 नवम् अंक

अप्रैल 2015

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 सुन्दरता हृदय में है चेहरे पर नहीं

विशेष स्तम्भ

11 समसामयिक सामान्य ज्ञान

16 आर्थिक परिदृश्य

24 केन्द्रीय बजट 2015-16

27 रेल बजट 2015-16 : यात्री सुविधाओं के विस्तार पर बल

29 आर्थिक समीक्षा 2014-15 में अर्थव्यवस्था की स्थिति व चुनौतियों का लेखा-जोखा

31 राष्ट्रीय परिदृश्य

34 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

37 क्रीड़ा जगत्

40 विज्ञान समाचार

42 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

43 सारभूत तत्व कोष

46 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

लेख

48 समसामयिक राजनैतिक लेख—बदलते दौर में भारत-रूस सम्बन्धों की रूप रेखा

50 समसामयिक लेख—असैन्य परमाणु ऊर्जा का रास्ता साफ

51 आध्यात्मिक लेख—गीता ज्ञान आज और अधिक प्रासंगिक

52 कैरियर लेख—(i) एस.एस.बी.

56 (ii) एस. एस. सी. द्वारा केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बलों में कॉंस्टेबिलों की भर्ती परीक्षा, 2015

हल प्रश्न-पत्र

60 इन्टैलिजेन्स ब्यूरो सुरक्षा सहायक (कार्यपालक) परीक्षा, 2014

64 आर.आर.सी. (पटना) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

71 आर.आर.सी. (भोपाल) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

78 उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय सहायक समीक्षा अधिकारी परीक्षा, 2014

एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी स्तर (10+2) परीक्षा, 2014

89 सामान्य बुद्धिमत्ता

93 English Language

95 संख्यात्मक अभिरुचि

102 सामान्य जानकारी

105 भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल ट्रेड्समैन परीक्षा, 2014

108 छत्तीसगढ़ प्री. बी. एड. परीक्षा, 2014

115 आगामी बिहार कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के लिए बिहार पर वस्तुनिष्ठ प्रश्न

117 मध्य प्रदेश जनरल नर्सिंग/प्री.-नर्सिंग चयन परीक्षा, 2014

126 विविध तथ्य-यूनेस्को की विश्व विरासत में शामिल भारतीय धरोहर स्थल

128 क्या आप परिचित हैं?

130 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सुन्दरता हृदय में है चेहरे पर नहीं

– साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

दार्शनिक सुकरात शक्ल से बड़े कुरूप थे कुरूप होने के बावजूद एक दिन अकेले बैठे हुए शीशा हाथ में लेकर अपना मुँह देख रहे थे. काफी देर हो गई वे अपने चेहरे को निहार रहे थे. आइने में ऐसा करते देखकर उनका एक प्रिय शिष्य आश्चर्यचकित हुआ. वह कुछ बोला तो नहीं सिर्फ मुस्कराने लगा. विद्वान् सुकरात ने शिष्य की मुस्कराहट देखकर सब बातें समझ लीं. कुछ देर बाद सुकरात स्वयं बोले, ''प्रिय मैं जान गया हूँ कि तुम क्यों मुस्करा रहे हो.'' शायद तुम यह सोच रहे हो कि मुझ जैसा कुरूप व्यक्ति आखिर शीशा क्यों देख रहा है ? सुकरात पुनः बोले–''वत्स, शायद तुम नहीं जानते कि मैं शीशा क्यों देखता हूँ ?'' विनम्रता से शिष्य बोला– ''नहीं, गुरुजी मैं नहीं जानता'' सुकरात बोले कि मैं कुरूप हूँ इसीलिए हर रोज शीशा देखता हूँ. शीशा देखकर मुझे अपनी कुरूपता का भान होता है, किन्तु तभी मुझे साथ ही यह भी भान होता है कि मैं इस कुरूप शरीर के परे कुछ हूँ जिसका सच्चा रूप इस चेहरे पर अभी प्रकट नहीं हुआ है. यह चेहरा बाहर के रूप को बता सकता है और जो मेरे भीतर का रूप है उसको यह चेहरा नहीं बता सकता और लोग बाहर के चेहरे को ही देख सकते हैं भीतर के चेहरे को नहीं. असली सौन्दर्य हृदय में है. आत्मा की पवित्रता में है. असली सौन्दर्य इस चेहरे में नहीं है और जो इस शीशे पर झलकता नहीं मैं इस शीशे को देखकर अपने दोनों रूपों का भान करता हूँ कि बाहर से क्या दिखता हूँ और भीतर से क्या हूँ ? दुनिया भी तो ऐसी ही है वह बाहर से क्या दिखती है और भीतर से कैसी है ? खैर, मैं फिर भी कहता हूँ कि कुरूप हो या सुरूप आइना देखो जरूर और आइना देखकर वह बोध लाओ कि अगर कुरूप हो, तो कुछ ऐसे अच्छे कर्म करो कि आपके कर्मों के आगे कुरूपता ढक जाए और अगर सुरूप हो तो ऐसे कर्म करो कि आपको देखकर प्रत्येक व्यक्ति कहे कि ये जितने बाहर से सुन्दर हैं उतने ही भीतर से भी सुन्दर हैं. आपकी सुन्दरता दोनों ओर निखर जाए.

ऐसा नहीं है कि चेहरे में सुन्दरता है ही नहीं चेहरे में भी सुन्दरता होती है. पुरानी कहावत है कि 'यत्राकृष्थित तत्रगुणावसन्ति' जहाँ गुण है, जहाँ आकृति अच्छी है वहाँ वैसे कोई गुण भी होंगे आकृति हमारे गुणों को दर्शित करती है. Face is the index of man इंसान का चेहरा इंसान के बारे में बहुत कुछ बताता है, किन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि हम सुन्दर चेहरों को देखकर आकर्षित हो जाते हैं और उस सौन्दर्य की ललक हमें बेताब बना देती है, किन्तु जब हम उसके नजदीक जाते हैं उसके साथ समय गुजारते हैं, तब पता लगता है कि ये सुन्दरता केवल ऊपरी थी भीतर कुछ नहीं था जैसे नकली फूल ऊपर से सुन्दर दिखते हैं सजावट के काम भी आते हैं, किन्तु उनके नजदीक जाओ, तो वे खुशबू नहीं दे सकते, वे किसी भँवरे को आकर्षित नहीं कर सकते, उनमें पराक्रम नहीं है. उनके अन्दर फलों को पैदा करने की क्षमता नहीं है. ठीक इसी तरह से कई लोग सौन्दर्य के धारक तो होते हैं, किन्तु उनका हृदय अगर सद्गुणों से आपूरित न हो, तो वह हृदय जो कलुषित है, किन्तु चेहरा सुन्दर है उसको हम यही कहेंगे कि 'विशुकुम्भम् पयोमुखम्' अन्दर जहर भरा है ऊपर अमृत का घड़ा है. ऐसे अमृत से दूर ही रहना जरूरी है. आनन्दित भाव में जीवन व्यतीत करने पर हमारे चेहरे पर एक अपूर्व शान्ति छाएगी जैसे–महात्मा गौतम बुद्ध, भगवान महावीर के चेहरे पर थी ये अपूर्व आभा के धनी लोग थे. इनके चेहरे पर सुन्दरता उनके भीतर की आत्मा की खिलावट की वजह से आ रही थी हम देखें हमारा हृदय कितना सुन्दर है, कितना सौम्य है, क्या वह हर एक प्राणी के प्रति प्रेमपूर्ण है ? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम जरा सी प्रतिकूलता मिलते ही किसी भी जीव को मारने, काटने की बात सोचने लग जाते हैं. हम अपने हृदय को दूषित होने से बचाएं. हृदय अगर सबके प्रति सद्भावपूर्ण रहता है, तो हृदय में जो सौम्यता प्रकट होगी, वह पूरे शरीर पर एक अपूर्व शान्ति और समाधि की आभा ले आएगी. उस आभा से नजदीक आने वाले सभी लोगों को शांति का, आनन्द का अहसास होगा. क्या कारण है कि जब हम महात्मा जैसे लोगों के समीप बैठते हैं हमारे हृदय का सारा आलस्य मिट जाता है. हम मन्दिर में भगवान की प्रतिमा के सामने बैठते हैं, तो स्वतः हमारा मस्तक झुक जाता है. हमारा हृदय संगीतमय बन जाता है. कारण क्या है ? कारण है हमारे सामने बैठे हुए व्यक्ति अथवा प्रतिमा के भीतर की शान्ति, भीतर की समता वे लोग पक्षपात से रहित हैं. हम बच्चों के साथ रहते हैं, तो हमारे भीतर में भी बड़ा आनन्द रहता है

●●●